पद १०

(राग: कालंगडा - ताल: धुमाळी)

सखया जावे निजगुरुचरणा शरणा झडकरी। त्याविण दूजा त्राता नाहीं तुजला जगदंतरी।।ध्रु.।। नित्यानन्दं निरुपम सुखदं भज देशिकनाथम्। मूर्खतया त्वं संसृतिकूपे पतितोऽसीह कथम्। अर्थमनर्थं त्यक्त्वा स्वार्थं साधय परमार्थम्। धृत्वा नरतनुमिह भूलोके श्रमिस किं व्यर्थम्।।१।। येनु माडिदरे येनू इल्ला सद्गुरुहीनरिगे। ध्यानधारणा माडिद श्रमवे हुलिबण्णा नरिगे। गुरुमार्गविण हादी इल्ला होगलिक्के अल्लिगे। यच्चर बिट्ट येनु इट्टी मूर्खा नी मलगिद्दे।।२।। गुरु विश्वेश्वर पादोदक जानले वो ही गंगा। तारक मन्त्र उपदेस सुनते ही अज्ञान जावेगा। ज्ञानगुरु दृष्टी पड़ते ही सज्ञान जागेगा। जो इस मार्ग से निकल गया वो फिर नही आवेगा।।३।। बहत योनी बहत साधन बह युग मी फिरलो। परी आपुल्या स्थानालागीं नाहीं पावलो। मनोहर म्हणें जेव्हां

श्रीमाणिक चरणा लागलो। तेव्हां अनिर्वाच्य खूणा आपुल्या लाधलो।।३।।